

## ईश्वर की दविय दया (3 का भाग 3): पापी

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम की मान्यताएं ईश्वर के बारे में](#)

द्वारा: Imam Mufti

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

ईश्वर की दया हम सभी के बहुत करीब होती है, और हम जैसे ही तैयार होते हैं, ये हमे गले लगा लेती है। इस्लाम मनुष्य की पाप करने की प्रवृत्तको जनता है, क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य को कमजोर बनाया है। पैगंबर ने कहा:



**"आदम के सभी बच्चे लगातार गलती करते हैं ..."**

इसके साथ ही ईश्वर हमें बताता है कि वह पापों को क्षमा करता है। इसी हदीस मे आगे:

**"... लेकिन जो लगातार गलती करते हैं उनमें से सबसे अच्छे वे हैं जो लगातार पश्चाताप करते हैं।"  
(अल-तरिमजि, इब्न माजा, अहमद, हकीम)**

ईश्वर कहता है:

**"आप कह दें मेरे उन भक्तों से, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम नरिाश न हो ईश्वर की दया से। वास्तव में, ईश्वर क्षमा कर देता है सब पापों को। नशिचय ही वह क्षमा करने वाला, सबसे दयालु है।" (कुरआन 39:53)**

दया के पैगंबर मुहम्मद सभी लोगों को खुशखबरी देते थे:

**"मेरे सेवकों से कह दो कि मैं वास्तव में क्षमा करने वाला, परम दयालु हूं।" (कुरआन 15:49)**

पश्चाताप ईश्वरीय दया को आकर्षति करता है:

"... क्यों तुम क्षमा नहीं मांगते ईश्वर से, ताकतुम पर दया की जाये? (कुरआन 27:46)

"... ईश्वर की दया हमेशा सदाचारियों के करीब है!" (कुरआन 7:56)

प्राचीन काल से ही ईश्वर की दया ने वशिवासियों को सजा से बचाया है:

"और जब हमारा आदेश आ गया, तो हमने हूद को और जो उसके वशिवास के साथ थे उनको अपनी दया से बचा लिया... (कुरआन 11:58)

"और जब हमारा आदेश आ गया, तो हमने शोऐब को और जो उसके वशिवास के साथ थे उनको अपनी दया से बचा लिया... (कुरआन 11:94)

पापी के प्रतर्ईश्वर की दया की परपूरणता नमिन्लखिति में देखी जा सकती है:

## 1. ईश्वर पश्चाताप को स्वीकार करता है

"और ईश्वर चाहता है कतिम पर दया करे तथा जो लोग वासनाओं के पीछे पड़े हुए हैं, वे चाहते हैं कि तुम बहुत अधकि झुक जाओ।" (कुरआन 4:27)

"क्या वे नहीं जानते कि ईश्वर ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता है और उनके दानों को स्वीकार करता है और वास्तव में, ईश्वर क्षमा करने वाला, सबसे दयालु है।" (कुरआन 9:104)

## 2. ईश्वर उस पापी को पसंद करता है जो पश्चाताप करता है

"... क्योंकि ईश्वर उनको पसंद करता है जो नरिन्तर पश्चाताप करते हैं...।" (कुरआन 2:22)

पैगंबर ने कहा:

"यदमिनुष्य पाप नहीं करता, तो ईश्वर अन्य प्राणियों की रचना करता जो पाप करते, और वह उन्हें क्षमा करता, क्योंकि विह क्षमाशील, अत-दियालु है।" (अल-तरिमजिी, इब्न माजा, मुसनद अहमद)

### 3. ईश्वर प्रसन्न होता है जब कोई पापी पश्चाताप करता है, क्योंकि उसे समझ होती है कि एक ईश्वर है जो पापों को क्षमा करता है!

पैगंबर ने कहा:

"जब कोई पश्चाताप करता है तो ईश्वर अपने दास के पश्चाताप से इतना प्रसन्न होता है जतिना तुम में से कोई नहीं हो सकता, उस ऊंट के वापस मिलने से जसि पर वह एक बंजर रेगसितान में सवार था, और ऊंट उसके खाने-पीने की चीजों को लेकर भाग गया था। जब वह नरिश् हो जाता है, तो एक पेड़ की छाया में लेट जाता है, और जब वह नरिश् होता है, तो ऊंट आ जाता है और उसके पास खड़ा हो जाता है, और वह उसकी लगाम को पकड़ के खुशी से चलिाता है, 'हे ईश्वर, तुम मेरे दास हो और मैं तुम्हारा पालनहार!' - उसने शब्दों की ये गलती अपनी अत्यधिक खुशी के कारण की" (सहीह मुस्लिमि)

### 4. पश्चाताप का द्वार हर समय खुला है

ईश्वरीय दया का द्वार वर्ष के हर दिन और हर रात खुला है। पैगंबर ने कहा:

"दिन में पाप करने वाले के पश्चाताप को स्वीकार करने के लिए ईश्वर रात में अपना हाथ बढ़ाता है, और रात में पाप करने वाले के पश्चाताप को स्वीकार करने के लिए ईश्वर दिन में अपना हाथ बढ़ाता है - सूरज के पश्चिम से निकलने के दिन तक जो न्याय के दिन के प्रमुख संकेतों में से एक है।" (सहीह मुस्लिमि)

### 5. बार-बार पाप करने पर भी ईश्वर पश्चाताप स्वीकार करता है

ईश्वर पापी के प्रति बार-बार अपनी दया दिखाता है। सोने के बछड़े का पाप किए जाने से पहले इजराइल के बच्चों के प्रति ईश्वर की दया देखी जा सकती है, ईश्वर ने इजराइल के साथ अपनी दया के अनुसार व्यवहार किया, उनके पाप करने के बाद भी ईश्वर ने साथ दया की। अर-रहमान कहता है:

"... और जब हमने मूसा को (तौरात देने के लिए) चालीस रात्रिका वचन दिया, फिर उनके पीछे तुमने बछड़े को पूजना शुरू कर दिया और तुम पापी बन गए। हमने इसके बाद भी तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकतुम कृतज्ञ बनो।" (कुरआन 2:51-52)

पैगंबर ने कहा:

"एक आदमी ने पाप किया और फरि कहा, 'हे मेरे ईश्वर, मेरे पाप को क्षमा कर दे,' तो ईश्वर ने कहा, 'मेरे दास ने पाप किया, तब उसे एहसास हुआ कि उसका एक ईश्वर है जो पापों को क्षमा कर सकता है और उसे इसके लिए दंडति कर सकता है।' उस आदमी ने फरि से पाप किया, और फरि कहा, 'हे मेरे ईश्वर, मेरे पाप को क्षमा कर दे।' ईश्वर ने कहा, 'मेरे दास ने पाप किया, तब उसे एहसास हुआ कि उसका एक ईश्वर है जो पापों को क्षमा कर सकता है और उसे इसके लिए दंडति कर सकता है।' आदमी ने फरि पाप किया (तीसरी बार), फरि उसने कहा, 'हे मेरे ईश्वर, मेरे पाप को क्षमा कर दे,' और ईश्वर ने कहा, 'मेरे दास ने पाप किया है, तब उसे एहसास हुआ कि उसका एक ईश्वर है जो पापों को क्षमा कर सकता है और उसे इसके लिए दंडति कर सकता है। जो तुम चाहो करो, क्योंकि मैंने तुम्हें माफ कर दिया है।'" (सहीह मुस्लमि)

## 6. इस्लाम अपनाने से पछिले सभी पाप मटि जाते हैं

पैगंबर ने बताया कि इस्लाम को स्वीकार करने से नए मुसलमान के सभी पछिले पाप मटि जाते हैं, चाहे वे कतिने भी गंभीर क्यों न हों, बस एक शर्त है: नया मुसलमान इस्लाम को पूरी तरह से ईश्वर के लिए स्वीकार करे। कुछ लोगों ने ईश्वर के पैगंबर से पूछा, 'ऐ ईश्वर के पैगंबर! इस्लाम अपनाने से पहले अज्ञानता के दनिों में हमने जो किया उसके लिए क्या हम दंडति होंगे?' उन्होंने जवाब दिया:

**"जो कोई इस्लाम पूरी तरह से ईश्वर के लिए स्वीकार करता है उसे दंडति नहीं किया जाएगा, लेकिन जो किसी अन्य कारण से ऐसा करता है, वह इस्लाम से पहले और बाद के सभी कार्यों के लिए जवाबदेह होगा।"** (सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लमि)

यद्यपि ईश्वर की दया किसी भी पाप को माफ करने के लिए पर्याप्त है, यह मनुष्य को सही व्यवहार करने की अपनी जम्मेदारी से मुक्त नहीं करती है। मोक्ष के मार्ग में अनुशासन और परशिरम की आवश्यकता है। इस्लाम में मोक्ष का नियम केवल ईश्वर में विश्वास करना नहीं, बल्कि आस्था और इस्लाम के कानून का पालन करना भी है। हम अपूर्ण और कमजोर हैं और ईश्वर ने हमें इसी तरह बनाया है। जब हम पवतिर कानून का पालन करने में चूक जाते हैं, तो प्रेम करने वाला ईश्वर हमें क्षमा करने के लिए तैयार रहता है। क्षमा केवल ईश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करने, फरि से पाप न करने का दृढ़ इरादा करने और उनकी दया की याचना करने से मिलती है। लेकिन हमेशा याद रखना चाहिए कि स्वर्ग सरिफ कर्मों से नहीं मिलेगा, ईश्वरीय कृपा से मिलेगा। दया के पैगंबर ने इस तथ्य को स्पष्ट किया:

"तुम में से कोई भी सरिफ अपने कर्मों से स्वर्ग मे नही जायेगा। उन्होंने पूछा, 'हे ईश्वर के दूत, आप भी नही?' उन्होंने कहा, 'मै भी नही, जब तक कि ईश्वर मुझे अपनी कृपा और दया से ढक न दें।"  
(सहीह मुस्लमि)

ईश्वर में वशिवास, उसके कानून का पालन करना, और अच्छे कार्य करना स्वर्ग में जाने के कारण है, कीमत नही।

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/421>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।